ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

अरावली पहाड़ीः आदिवासियों का प्राकृतिक आशियाना

अभिषेक वशिष्ठ
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थान

कुवेर सिंह मीना
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
स्व.पं.न.कि. शर्मा राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थान

सारांश

आदिवासी शब्द आदि और वासी दो शब्दों का बना है जिसका अर्थ मूल निवासी होता है। आदिवासी समाज की भाषा, संस्कृति, परम्परा और जनजीवन प्रकृति के बहुरंगी आयामों से भरा है।पुरातन संस्कृत ग्रंथो के लेखों में आदिवासियों को अत्विका और वनवासी भी कहा गया है। संविधान में आदिवासियों के लिए अनुसूचित जनजाति शब्द का प्रयोग किया गया है। महात्मा गांधी ने आदिवासियों को गिरिजन (पहाड़ पर रहने वाले लोग) कहकर पुकारा है जिससे तात्पर्य यह है कि आदिवासियों की जन्म भूमि पर्वत ही रहे है। राजस्थान में मुख्य रूप से मीना, गरासिया, सहरिया, डामोर आदि जनजातियाँ आरम्भ से ही निवास करती रही है। राज्य में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक जनसंख्या क्रमशः मीना, भील, गरासिया जनजातियों की हैं। राज्य में पाई जाने वाली उपरोक्त सभी जनजातियों का उद्भव एवं विकास अरावली पर्वत अथवा पठार पर ही हुआ है।अरावली पर्वत प्रचीन भारत के सप्तकुल पर्वतों में से एक है। यह संसार की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है जो राजस्थान को उत्तर से दक्षिण दो भागों में बांटती है। अरावली पहाड़ी राजस्थान में न केवल आदिवासिओं का प्राकृतिक आशियाना है अपितु आदिवासियों की समस्त आर्थिक क्रियाएं एवं व्यवसाय भी अरावली पहाड़ी के इर्द गिर्द घूमती है।

मुख्य शब्द : पुरखा, आदिवासी, गिरिजन, वंशज, पृथ्कत्य, नींव, नैऋत्य, ईशान्, झूमिंग, चिमाता।

प्रस्तावना

आदिवासी शब्द आदि और वासी दो शब्दों का बना है जिसका अर्थ मूल निवासी होता है। आदिवासी समाज की भाषा, संस्कृति, परम्परा और जनजीवन प्रकृति के बहुरंगी आयामों से भरा है। आदिवासी समाज सम्प्रदायपूरक नहीं बल्कि 'समुदाय पूरक' समाज है। आदिवासी जीवन दर्शन प्रकृति जल, आपदा, अग्नि, जंगल, पहाड़, नदी, मैदान, पशु, पंछी से प्रेरित है और यही आदिवासी समाज की विशिष्ठता हैं कि वे प्रारम्भ से प्रकृति प्रेमी और प्रकृति के उपासक रहे है। प्रकृति ही उनकी दुनिया है और उनके पुरखा उनके पेन या देव रहे है। पुरातन काल में आदिवासी समुदाय में किसी मनुष्य को देवता नहीं मानते थे और ना कभी असंख्य देवताओं की कभी कल्पना की गई। आदिवासी समुदाय धरती, नदी, नाला, झरने आदि के निकट अपनी बेदी बना कर प्रकृति का सम्मान करते रहे है। अदिवासी 'कुदरती इंसान'' है जिसका महत्व यू.एन.ओं (UNO) ने दिया है क्योंकि आदिवासी 'प्रकृति रक्षक' है, प्रकृति पूजक हैं और स्ण्त्ण् 1972 की पृ.सं. 419 में आदिवासियों का उल्लेख नेचुरल कोम्युनिटी के नाम से किया गया है।

सामान्यतः ''आदिवासी'' (ऐबोरिजिनल) शब्द का प्रयोग किसी भौगोलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है जिनका उस भौगोलिक क्षेत्र से ज्ञात इतिहास में सबसे पुराना सम्बन्ध रहा हो। परन्तु संसार के विभिन्न भू–भागों में जहाँ अलग–अलग क्षेत्रों से आकर लोग बसे हो उस विशिष्ठ भाग के प्राचीनतम अथवा प्राचीन निवासियों के लिए भी इस शब्द का उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ 'इंडियन' अमरीका के आदिवासी कहे जाते हैं और प्राचीन साहित्य में दस्यु एवं निषाद आदि के रूप में विभिन्न प्रजातियों समूहों का उल्लेख किया गया है उनके वंशज समसामयिक भारत में आदिवासी माने जाते हैं। भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा आदिवासिओं का हैं। पुरातन संस्कृत ग्रंथो के लेखों में आदिवासियों को अत्विका और वनवासी भी कहा गया है। संविधान में आदिवासियों के लिए अनुसूचित जनजाति शब्द का प्रयोग किया गया है। यहां यह बात भली भांति स्वीकार करनी चाहिए कि विश्व की समस्त मानवता आरंभिक अवस्था में आदिम शैली का जीवन जिया करती है। धीरे–धीरे

विकास की यात्रा के साथ अधिकांश जन–समूह आदिम अवस्था से आगे निकलते चले गये। जो मानव समूदाय अभी भी आदिम जीवनशैली की कुछ वशिष्ठताएं संजोए हुए है वे मिलकर आदिवासी समाज के रूप में हमारे सामने दिखाई देते है। इन विशिष्ठताओं में सबसे प्रमुख है प्रकृति की गोद में जीवन यापन सम्पूर्ण प्राणी जगत के साथ सह–अस्तित्व की भावना, सामूहिकता का महत्व तथा निजी सम्पत्ति की अवधारणा का विकसित नहीं होना उसका शैषवकाल में होना आदि। आदिवासी शेष समाज से पृथक होता है और यह पृथ्कत्य समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिकता के स्तर पर स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। महात्मा गांधी ने आदिवासियों को गिरिजन (पहाड़ पर रहने वाले लोग) कहकर पुकारा है जिससे तात्पर्य यह है कि आदिवासियों की जन्म भूमि पर्वत ही रहे है।

शोध उद्देश्य

1. राजस्थान में जनजाति के वितरण का अध्ययन।
2. राजस्थान में जनजाति के सांस्कृतिक भूदृश्यों में अरावली की महत्ता को समझना।

राजस्थान में मुख्य रूप से मीना, गरासिया, सहरिया, डामोर आदि जनजातियाँ आरम्भ से ही निवास करती रही है। राज्य में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक जनसंख्या क्रमशः मीना, भील, गरासिया जनजातियों की हैं। राज्य में पाई जाने वाली उपरोक्त सभी जनजातियों का उद्धभव एवं विकास अरावली पर्वत अथवा पठार पर ही हुआ है। राजस्थान में इस सन्दर्भ में यदि बात की जाये तो अरावली पर्वतमाला न केवल राजस्थान की अर्थव्यवस्था की नीव है अपितु निश्चित रूप से आदिवासिओं की जन्मभूमि भी रही हैं। अरावली पर्वतमाला ने आदिवासिओं को प्रारम्भ से ही प्राकृतिक आश्रय प्रदान किया है। आज भी राजस्थान में अनुसूचित जनजाति का वितरण उन्हीं जिलों में अधिक है जहाँ अरावली का विस्तार है जैसे अलवर, दौसा, जयपुर, सीकर, अजमेर, उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर आदि।

अरावली पर्वत प्रचीन भारत के सप्तकुल पर्वतों में से एक है। यह संसार की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है जो राजस्थान को उत्तर से दक्षिण दो भागों में बांटती है। अरावली का सर्वोच्च पर्वत शिखर सिरोही जिले में गुरूशिखर (1722 मी.) है। अरावली पर्वत श्रंखला की कुल लम्बाई गुजरात से दिल्ली तक 692 किलोमीटर है। अरावली पर्वत श्रंखला का लगभग 80 प्रतिशत विस्तार राजस्थान में है।

मानचित्रः– राजस्थान का भौतिक क्षेत्र एवं अरावली का विस्तार

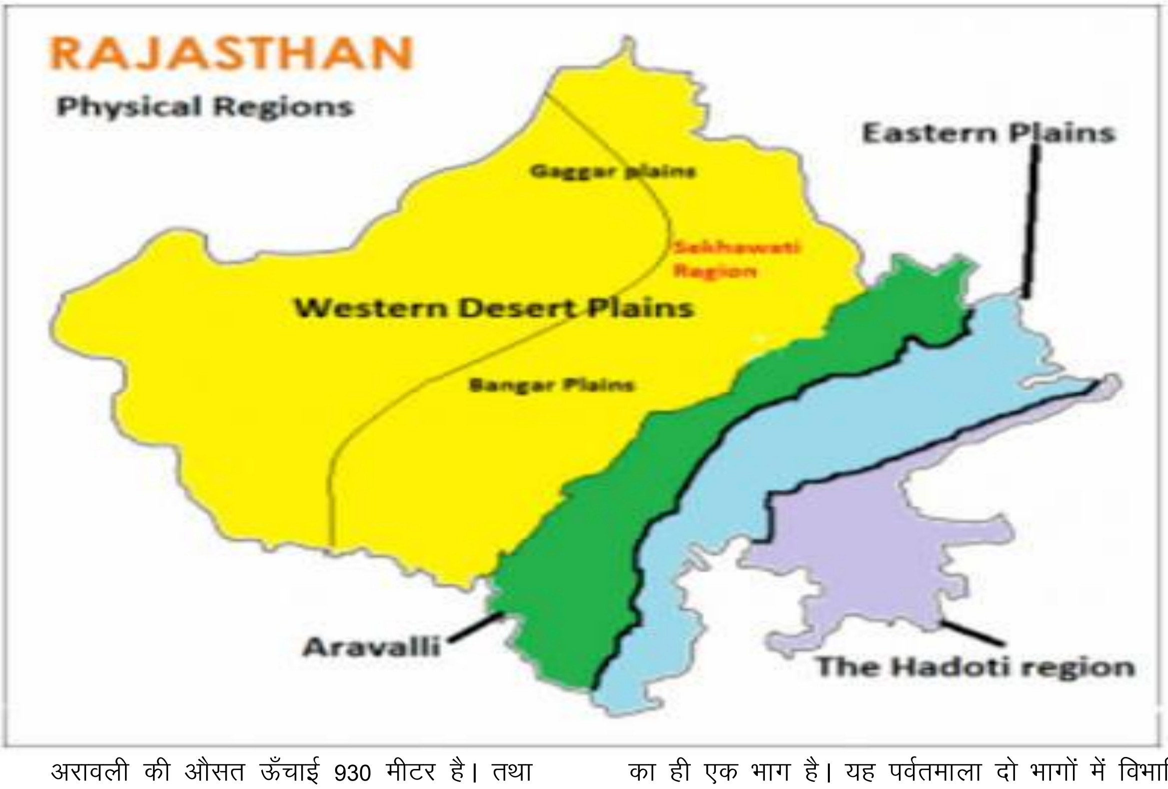

अरावली की औसत ऊँचाई 930 मीटर है। तथा अरावली के दक्षिण भाग की ऊँचाई व चौड़ाई सर्वाधिक है। राजस्थान में यह पहाड़ नैऋत्य दिशा से चलता हुआ ईशान दिशा में करीब दिल्ली तक पहुंचा है। राजस्थान राज्य के पूर्वात्तर क्षेत्र से गुजरती 550 किलोमीटर लम्बी इस पर्वतमाला की कुछ चट्टानी पहाड़ियाँ दिल्ली के दक्षिण हिस्से तक चली गई हैं। दिल्ली में स्थित राष्ट्रपति भवन रायसीना पहाड़ी पर बना हुआ है जो कि अरावली का ही एक भाग है। यह पर्वतमाला दो भागों में विभाजित है– सांभर– खेतड़ी पर्वतमाला–जिसमें तीन विच्छिन्न कटकीय क्षेत्र आते हैं। अरावली पर्वतमाला प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण रही है। अरावली पर्वमाला प्रारम्भ से ही वन्य जीवों का आश्रयस्थल रहा है। यहाँ भालू, लोमड़ी, बाघ, चीता, हिरण, सांभर, बारहसिंगा आदि अनेक प्रकार के जंगली जानवर पाये जाते हैं। फलस्वरूप अरावली पहाड़ी प्रारम्भ से ही आखेट का केन्द्र रही है।

राजस्थान में पाई जाने वाली प्रमुख जनजातियों में से एक भील जनजाति है। यह भारत की सबसे प्राचीनतम जनजाति है। भील शब्द की उत्पति ''बिल से हुई है जिसका द्रविड़ भाषा में अर्थ होता हैं ''धनुष''। प्राचीन संस्कृत साहित्य में भील शब्द लगभग सभी बनवासी जातियों जैसे निषाद, शबर आदि के समानार्थी रूप से प्रयुक्त की जाती थी जो धनुष–बाण से शिकार करके अपना पेट–पालन करता था । जिस प्रकार उत्तरी राजस्थान में राजपूतों के उदय से पहले मीणों के राज्य रहें है उसी प्रकार दक्षिणी राजस्थान में हाडौती प्रदेश में भीलों के अनेक छोटे–छोटे राज्य रहे है।

चित्र :– राजस्थान में भील जनजाति

भीलों के आखेट के लिए जंगली जानवर अरावली क्षेत्र में सर्व सुलभ रहे है। ऐसे में अरावली भीलों की आर्थिक क्रिया काप्रमुख केन्द्र है। राजस्थान में पाये जाने वाले सभी आदिवासियों द्वारा विशेष रूप से भीलों द्वारा अरावली पहाड़ी ढालों पर की जाने वाली स्थानांतरित कृषि की जाती हैं जिसे स्थानीय भाषा में चिमाता (झुमिंग कृषि का एक नाम) कहा जाता है।

अरावली पर्वत श्रृंखला में रहने वाले सबसे प्रमुख जनजाति मीणा है जो कि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनजाति आबादी में प्रथम स्थान तथा भारत में चतुर्थ स्थान रखती हैं। यह जनजाति मुख्य रूप से अलवर, दौसा, सवाईमाधोपुर, करौली, उदयपुर आदि जिलों में निवास करती है। यह जनजाति आज भी कृषि एवं पशुपालन जैसे व्यवसाय में संलग्न है। मीना जनजाति के जीवन का समस्त तानाबाना अरावली पहाड़ी के ईद–गिर्द ही घूमता है। मीना जनजाति की आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं जैसे व्यवसाय, परम्पराएँ रीति रिवाज आदि का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सम्बन्ध अरावली पहाड़ी से सम्बन्धित है।

मीना जनजाति के लोग विभिन्न शारीरिक बीमारियों के इलाज के लिए अरावली क्षेत्र में उगने वाली वनस्पतियों का ही प्रयोग करते रहे हैजैसे पाचन तंत्र सम्बन्धित रोगों के लिए काला कूड़ा नामक वृक्ष की छाल का प्रयोग किया जाता रहा है और चर्म रोग के लिए शतावरी वृक्ष की जड़ एवं पापड़ वृक्ष के पत्तों का लेपन किया जाता है। इसी तरह उदर है। मीना जनजाति से सम्बन्ध रखने वाले प्रो.के.सी. मीना के अनुसार नेहडा प्रदेश (थानागाजी तहसील अलवर) में स्थित पिपलाई पंचायत में स्थित पहाडी पर एक विशेष प्रकार की पीली मिट्टी पाई जाती है जो आदिवासी महिलाओं द्वारा केश स्नान में प्रयुक्त होती है तथा इस मिट्टी को घर की बहन एवं बेटियों को उपहार में देने की परम्परा आज भी प्रचालित हैं। मीना जनजाति के लोग का मुख्य भोजन अनाज, मक्का एवं गेहूं रहा है। जिसमें मक्का की खेती में लोग पहाड़ी ढालों पर ही करते है।

राजस्थान में पाई जाने वाले एक अन्य जनजाति बावरियां है जिनका एक मात्र व्यवसाय आखेट ही रहा है। ये लोग अरावली क्षेत्र में पाये जाने वाले तीतर, बटेर, खरगोश, सांभर, चीतल आदि जानवरों को शिकार करते हैं। यद्यपि अब शिकार पर प्रतिबन्ध लगने से प्रवृति थोड़ी कम हुई है।

गरासिया जनजाति के लोग मुख्य रूप से उदयपुर जिले के आमेर क्षेत्र खैरवाड़ा पंचायत समिति, कोटडा, फलासिया, गोगुन्दा एवं सिरोही जिले के पिण्डवारा तथा आबू रोड तथा पाली जिले के बाली क्षेत्र में बसे हुए है। इस प्रकार गरासिया जनजाति अरावली की गिरवा पहाड़ी, कुम्भलगढ, आबू पर्वत, भोराठ का पठार, गोगुन्दा पर्वत आदि पहाडियों में ही निवास करती है। गरासिया जनजाति की अर्थव्यवस्था भी आखेट, पशुपालन एवं कृषि पर आधारित हैं। इस जनजाति के लोग सामान्यतः अपना घर भी अरावली पहाड़ी ढालों पर ही बनाते है।

डामोर जनजाति डूंगरपुर जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति के दक्षिण–पश्चिमी केन्द्र (गुदावाड़ा–डूंका आदि गांवों में) केन्द्रित है। बांसवाड़ा एवं उदयपुर जिले में भी जनजाति के लोग रहते है। यह जनजाति प्रारम्भ से ही अरावली क्षेत्र में धुमुन्त जीवन व्यतीत करती करती रही है।

निष्कर्ष

अरावली पहाड़ी राजस्थान में न केवल आदिवासिओं का प्राकृतिक आशियाना है अपितु आदिवासियों की समस्त आर्थिक क्रियाएं एवं व्यवसाय भी अरावली पहाड़ी के इर्द गिर्द घूमती है। राजस्थान में अरावली को आदिवासिओं की सभ्यता एवं संस्कृति का पालना कहा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आदिवासी और प्रकृति के मध्य एक साहचर्य भाव है। जो कि छायावाद के आलम्बन रूप का छायासा प्रतीत होता है। यह माना जाता है कि जहाँ एक ओर प्रकृति (अरावली का पर्वत श्रृंखलाएँ) आदिवासी को पल्लवित करती दिखाई पड़ती है। ठीक दूसरी ओर आदिवासी समुदाय भी प्रकृति को पुष्पित करता हुआ दिखाई पड़ता है। यह माना जाता है कि प्रकृति और आदिवासियों के मध्य अलिकली सम्बन्ध दिखाई पड़ता है। यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *टॉड कर्नल, राजस्थान का इतिहास, हिन्दी साहित्यागार, जयपुर – 1992*
2. *नाथूराका, लक्ष्मीनारायण, राजस्थान की अर्थव्यवस्था कॉलेज बुक डिपों, जयपुर – 1968*

3. समाज कला एवं संस्कृति कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर 1985
4. व्यास, कैलाश चन्द, राजस्थान की जातियों का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, जगदीश सिंह गहलोत शोध संस्थान, जोधपुर
5. मीना, हरिम साइबर सिटी से नंगे आदिवासियों तक, अनिरूद्ध बुक्स, दिल्ली – 2006
6. मीणा, केदारनाथ, आदिवासी कहानियाँ, कहानी संग्रह, अलक प्रकाशन, जयपुर
7. मीणा गंगासहाय, आदिवासी साहित्य विमर्श आलेख, अनामिका, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स, दिल्ली
8. मीना, हरिराम, आदिवासी दुनिया, आलेख नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली